सीबीएसई कक्षा -12 हिंदी कोर

महत्वपूर्ण प्रश्न

पाठ – 02

आनंद यादव (जूझ)

<u>**महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर**</u>

<u>**I. बोधात्मक प्रश्न**</u>

1. पाँचवीं कक्षा में दुबारा पढ़ने आए लेखक को किन कठिनाइयों का समाना करना पड़ा? 'जूझ' कहानी के आधार पर लिखिए।

उत्तर- जो लड़के चौथी पास करके कक्षा में आए, लेखक उनमें से गली के दो लड़कों के सिवाए और किसी को जानता तक नहीं था। जिन लड़कों को वह कम अक्ल और अपने से छोटा समझता था, उन्हीं के साथ अब उसे बैठना पड़ रहा था। वह अपनी कक्षा में पुराना विद्यार्थी होकर भी अजनबी बनकर रह गया। पुराने सहपाठी तो उसे सब तरह से जानते समझते थे, मगर नए लड़कों ने तो उसकी धोती, उसका गमछा, उसका थैला आदि सब चीज़ों का मज़ाक उड़ाना आरंभ कर दिया। उसके मन में यह दुख भी था कि इतनी कोशिश करके पढ़ने का अवसर मिला तो उसके आत्मविश्वास में भी कमी आ गई।

2. 'जूझ' कहानी में पिता को मनाने के लिए माँ और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई है। क्या ऐसा कहना ठीक है?

उत्तर- 'जूझ' कहानी में पिता को मनाने के लिए माँ और दत्ता जी राव की सहायता से एक चाल चली गई है। यह कहना बिल्कुल ठीक है। लेखक के पिता उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे। वे खुद अय्याशी करने के लिए बच्चे को खेती के काम लगाना चाहते थे। पढ़ने की बात करने पर वे जंगली सुअर की तरह गुर्राते थे। उन पर दत्ता जी राव का दबाव ही काम कर सकता था। अतः लेखक की माँ व दत्ता जी राव ने मिलकर उन्हें मानसिक तौर पर घेरा तथा आगे पढ़ने की स्वीकृति ली। यदि यह उपाय नहीं किया जाता तो लेखक कभी शिक्षित नहीं हो पाता।

3. 'जूझ' कहानी में चित्रित ग्रामीण जीवन का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी में ग्रामीण जीवन का यथार्थपरक चित्रण किया गया है। गाँव में किसान, जमींदार आदि कई वर्ग हैं। लेखक स्वयं कृषिकार्य करता हैं। उसके पिता बाजार में गुड़ के ऊँचे भाव पाने के लिए गन्ने की पेराई जल्दी करा देते हैं। गाँव में पूरा परिवार कृषि कार्य में लगा रहता है, चाहे बच्चे हों, महिलाएँ हों या वृद्ध। कुछ बड़े जमींदार भी होते हैं जिनका गाँव पर काफी प्रभाव होता है। गाँव में कृषक बच्चों की पढ़ाई-लिखाई पर कम ध्यान देते हैं। ग्रामीण स्कूलों में बच्चों के पास कपड़े भी पर्याप्त नहीं होते। बच्चों को घर व स्कूल का काम करना पड़ता था।

4. 'लेखक की माँ उसके पिता की आदतों से वाकिफ थी।' -लेखक की माँ ने लेखक का साथ किस प्रकार दिया?

उत्तर- लेखक की माँ अपने पति के स्वभाव से अच्छी तरह वाकिफ थी। वह जानती थी कि वह अपने लड़के को पढ़ाना नहीं चाहता।

पढ़ाई की बात से ही वह बरहेला सुअर की तरह गुर्राता है। इसके बावजूद वह लेखक का साथ देती है और दत्ता जी राव के पास जाकर अपने पति के बारे में सारी बातें बताती है। अंत में, वह देसाई को अपने आने की बात पति को न बताने के लिए भी कहती है।

5. मंत्री नामक अध्यापक पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- मंत्री नामक अध्यापक गणित पढ़ाते थे। वे प्रायः छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। काम न करने वाले बच्चों की गरदन हाथ से पकड़कर उनकी पीठ पर घूसा लगाते थे। इस प्रकार से बच्चे के मन में दहशत थी। शरारती लड़के भी शांत रहने लगे थे। ये पढ़ने वाले बच्चों को प्रोत्साहन देते थे। अगर किसी का सवाल गलत हो जाता तो वे उसे समझाते थे। एकाध लड़के द्वारा मूर्खता करने पर उसे वहीं ठोंक देते। उनके डर से सभी लड़के घर से पढ़ाई करके आने लगे।

6. वसंत 'पाटील' कौन है? लेखक ने उससे दोस्ती क्यों व कैसे की?

उत्तर- वसंत पाटील दुबला-पतला, परंतु होशियार लड़का था। वह स्वभाव से शांत था तथा हर समय पढ़ने में लगा रहता था। वह घर से पूरी तैयारी करके आता था तथा उसके सभी सवाल ठीक होते थे। वह दूसरों के सवालों की जाँच करता था। उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया गया था। लेखक भी सुकी देखा देखी मेहनत करने लगा। उसने बस्ता व्यवस्थित किया, किताबों पर अखबारी कागज का कवर चढ़ाया तथा हर समय पढ़ने लगा। उसके सवाल भी ठीक निकलने लगे। वह भी वसंत पाटिल की तरह लड़कों के सवाल जाँचने लगा। इस तरह दोनों दोस्त बन गए तथा एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम करने लगे।

7. लेखक का पाठशाला में विशवास कैसे बढ़ा? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर- जब लेखक को वसंत पाटील के साथ दूसरे लड़कों के सवाल जाँचने का काम मिला, तब उसकी वसंत से दोस्ती हो गई। अब ये दोनों एक-दूसरे की सहायता से कक्षा के अनेक काम निपटाने लगे। सभी अध्यापक लेखक की 'आनंदा' कहकर बुलाने लगे। यह संबोधन भी उसके लिए बड़ा महत्वपूर्ण था। मानो पाठशाला में आने के कारण ही उसे स्वयं का नाम सुनने को मिला। 'आनंदा' की कोई पहचान बनी। एक तो वसंत की दोस्ती, दूसरा अध्यापकों का व्यवहार-इस कारण लेखक का अपनी पाठशाला में विश्वास बढ़ने लगा।

8. सौंदलगेकर कौन थे ? उनमें क्या विशेषता थी ?

उत्तर- न.वा. सौंदलगेकर लेखक के गाँव के स्कूल में मराठी पढ़ाने वाले अध्यापक थे। वे कविता बहुत अच्छे ढंग से पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। उनके पास सुरीला गला, छंद की बढ़िया चाल और रसिकता थी। उन्हें पुरानी व नयी मराठी कविताओं के साथ-साथ अंग्रेजी कविताएँ कंठस्थ थीं। उन्हें छंदों की लय, गति, ताल इत्यादि अच्छी तरह आते थे। वे स्वयं भी कविता करते थे तथा उन्हें सुनाते थे।

9. 'दत्ता जी राव की सहायता के बिना 'जूझ' कहानी का 'मैं' पात्र वह सब नहीं पा सकता था जो उसे मिला।' -टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- यह बात बिल्कुल सही है कि दत्ता जी राव की सहायता के बिना लेखक पढ़ नहीं सकता था। यदि दत्ता जी राव लेखक के पिता को नहीं समझाते तो लेखक को कभी स्कूल नसीब न होता। वह अर्धशिक्षित ही रह जाता तथा गीत, कविता, उपन्यास न लिख पाता। उच्च शिक्षा के अभाव में उसे अपने खेतों में मजदूर की तरह आजीवन काम करना पड़ता। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु

उसे जमींदार के खेतों में काम भी करना पड़ता। वस्तुतः उसका जीवन ही अंधकारमय हो जाता।

10. 'जूझ' के लेखक के मन में यह विशवास कब और कैसे जन्मा कि वह भी कविता की रचना कर सकता है?

अथवा

'जूझ' कहानी के लेखक में कविता-रचना के प्रति रुचि कैसे उत्पन्न हुई?

अथवा

' जूझ ' के लेखक के कवि बनने की कहानी का वर्णन कीजिए।

उत्तर- लेखक मराठी पढ़ाने वाले अध्यापक नावा, सौंदगलेकर की कला व कविता सुनाने की शैली से बहुत प्रभावित हुआ। उसे महसूस हुआ कि कविता लिखने वाले भी हमारे जैसे मनुष्य ही होते हैं। कवियों के बारे में सुनकर तथा कविता सुनाने की कला-ध्वनि, गति, चाल आदि सीखने के बाद उसे लगा कि वह अपने आस-पास, अपने गाँव, अपने खेतों से जुड़े कई दृश्यों पर कविता बना सकता है। वह भैस चराते-चराते फसलों या जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। वह हर समय कागज़ व पेंसिल रखने लगा। वह कविता को मास्टर को दिखाता। इस प्रकार उसके मन में कविता-रचना के प्रति रुचि उत्पन्न हुई।

11. दादा ने मन मारकर अपने बच्चे को स्कूल भेजने की बात मान तो ली, पर खेती-बाड़ी के बारे में उनसे क्या-क्या वचन लिए ? ' जूझ ' कहानी के आधार पर उत्तर दीजिए।

अथवा

बालक आनंद यादव के पिता ने किन शर्तों पर उस विद्यालय जाने दिया ?

उत्तर- दादा ने मन मारकर अपने बच्चे को स्कूल भेजने की बात मान तो ली, पर खेती-बाड़ी के बारे में उन्होंने निम्नलिखित वचन लिए-

(i) पाठशाला जाने से पहले ग्यारह बजे तक खेत में काम करना होगा तथा पानी लगाना होगा।

(ii) सवेरे खेत पर जाते समय ही बस्ता लेकर जाना होगा।

(iii) छुट्टी होने के बाद घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना होगा।

(vi) अगर किसी दिन खेत में ज़्यादा काम होगा तो उसे पाठशाला नहीं जाना होगा।

12. 'जूझ' कहानी की कौन-सी बात आपको सर्वाधिक प्रेरक लगती है?

उत्तर- 'जूझ' कहानी में हमें 'आनंदा' का बुझारूपन सर्वाधिक प्रेरक लगता है। वह पढ़ना चाहता है, परंतु पिता बाधक है। पिता को किसी तरह दबाव डलवाकर मनाया जाता है तो आर्थिक समस्या व काम का बोझ बाधा उत्पन्न करता है। स्कूल का अजनबी परिवेश

भी उसे परेशान करता है। लेखक इन सभी विपरीत परिस्थितियों पर जुझारूपन से नियंत्रण पाता है और स्वर्थ को होशियार बच्चों की पंक्ति में खड़ा पाता है।

13. कविता के प्रति रुचि जगाने में शिक्षक की भूमिका पर 'जूझ' कहानी के आधार पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी में लेखक के मन में कविताएँ रचने का प्रेरणास्रोत उसका शिक्षक सौदलगेकर रहे हैं। वस्तुतः शिक्षक का दायित्व बड़ा होता है। कविता रस, लय, छंद के आधार पर पढ़ाई व गाई जाती है। यदि शिक्षक का गला सुरीला है तथा उसे छंद, अलंकार, लय व ताल का ज्ञान है तो बच्चों में कविता सुनने व रचने की इच्छा जागृत होती है। यदि कोई बच्चा तुकबंदी करके कविता बनाता है तो शिक्षक उसे प्रोत्साहित कर सकता है। उसे कविता के संबंध में तकनीकी जानकारी दे सकता है तथा उसकी कमियों को दूर करने का सुझाव दे सकता है। अतः कविता के प्रति रुचि जगाने में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

14. 'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी का शीर्षक पूर्णतः उपयुक्त है। इसमें एक किशोर के देखे और भोगे हुए गँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की अत्यंत विश्वसनीय गाथा है। इसमें निम्न मध्यवर्गीय ग्रामीण समाज और लड़ते-जूझते किसान-मजदूरों के संघर्ष की भी अनूठी झाँकी है।

कहानी का नायक हर कदम पर संघर्ष करता है। वह बचपन में स्कूल में दाखिले के लिए संघर्ष करता है, फिर कक्षा में बच्चों की शरारतों से संघर्ष करता है तथा स्कूल में स्वयं को स्थापित करने के लिए मेहनत करता है। साथ ही, वह घर तथा खेत के सभी कार्य करता है। अपनी जुझारूपन की प्रवृत्ति से वह इन सब कार्यों को कर पाता है। कविता लिखने में भी वह संघर्ष करता है। अतः यह शीर्षक लेखक के जुझारूपन को व्यक्त करता है।

<u>II. निबंधात्मक प्रश्न</u>

1. किस घटना से पता चलता है कि लेखक की माँ उसके मन की पीड़ा समझ रही थी? 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर- लेखक पढ़ना चाहता था और उसके पिता उसे पढ़ाने वे बजाए उससे खेत का काम, पशु चराने का काम कराना चाहते थे। पिता ने अपनी इच्छा को ध्यान में रखकर ही लेखक की पढ़ाई छुड़वा दी थी। इसी बात से लेखक बहुत ही परेशान रहता था। उसका मन दिन-रात अपनी पढ़ाई जारी रखने की योजनाएँ बनाता रहता था। इसी योजना के अनुसार लेखक ने अपनी माँ से दत्ता जी राव सरकार के घर चलकर उनकी मदद से अपने पिता को राजी करने की बात कही। माँ ने लेखक का साथ देने की बात को तुरंत स्वीकार कर लिया। अपने बेटे की पढ़ाई के बारे में वह दत्ता जी राव से जाकर बात भी करती है और पति से इस बात को छिपाने का आग्रह भी करती है। इससे स्पष्ट होता है कि वह लेखक के मन की पीड़ा को समझती थी।

2. 'जूझ' कहानी के आधार पर दत्ता जी राव की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

अथवा

दत्ताराव ने लेखक की पढ़ाई की समस्या का समाधान किस प्रकार किया ?

उत्तर- 'जूझ' कहानी में दत्ता जी राव देसाई की भूमिका महत्वपूर्ण है। वे गाँव के जमींदार हैं तथा नेकदिल व उदार हैं। बच्चों व महिलाओं पर विशेष स्नेह है। वे हरेक की सहायता करते हैं। लेखक व उसकी माँ ने उन्हें अपनी पीड़ा बताई तो वे पिघल गए तथा निर्णय लिया कि वे लेखक के दादा को खरी-खोटी सुनकर सीधे रास्ते पर लाएँगे। वे साम-दाम-दंड-भेद किसी भी तरीके से अपनी बात मनवाना चाहते थे। उन्होंने दादा के आने पर हालचाल पूछा तथा बच्चे की पढ़ाई के संबंध में बात खुलने पर उसे खूब फटकार लगाई। उनकी डाँट से दाद की घिग्घी बँध गई तथा उसने आनंद की पढ़ाई के लिए सहमति दे दी।

3. कहानीकार के शिक्षित होने के संघर्ष में दत्ता जी राव देसाई के योगदान को 'जूझ' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- दत्ता जी राव देसाई गाँव का सम्मानित जमींदार हैं। वे नेकदिल, उदार व रोबीले हैं। कभी लेखक के पिता उन्हीं के खेतों में काम करते थे। लेखक के दादा राव साहब का सम्मान करते थे। लेखक ने अपनी माँ के साथ राव देसाई को अपनी पढ़ाई तथा पिता के रवैये के बार में बताया। राव साहब ने उनकी बात सुनी तथा दादा को भेजने को कहा। जैसे ही दादा घर आए, लेखक की माँ ने उन्हें राव साहब के पास जाने का संदेश दिया। वहाँ पर राव साहब ने उसे खूब डांटा। इस बीच दादा ने लेखक पर आवारागर्दी के आरोप लगाए जिनका उसने हिम्मत से जवाब दिया। राव साहब ने दादा को बच्चे को स्कूल भेजने के लिए कहा, साथ ही यह चेतावनी भी दी कि अगर वह उसे नहीं पढ़ाएगा तो वे स्वयं उसको पढ़ने का खर्चा देंगे। इस प्रकार लेखक की पढ़ाई में दत्ता का बहुत योगदान है।

4. 'जूझ' कहानी के माध्यम से लेखक ने क्या सीख दी है?

उत्तर- हमारा लेखक प्रतिभा संपन्न था, मगर ढोर चराने और खेत में पानी देने तथा उपले बनाने में अपनी सारी शक्ति लगा रहा था। पढ़ने की इच्छा भीतर-ही-भीतर कुलबुलाती रहती थी। सभी उसे छोरे कहकर बुलाते। वह पशुओं जैसा जीवन जी रहा था।

जब पढ़ने का अवसर मिला, तो उसने कविता-पाठ करने में सबको पीछे छोड़ दिया। गणित के सवाल हल करने में भी उसने पूरी कक्षा को पीछे छोड़ दिया। सभी अध्यापक उसे आनंद कहकर पुकारते थे, उसे मानो अपनी स्वयं की पहचान मिल गई। उससे लगा उसके पंख निकल आए हैं। वह बहुत ही खुश रहने लगा।

मनुष्य के जीवन में शिक्षा का बहुत महत्व है। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के समान होता है। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने यही सीख दी है।

5. 'जूझ' आत्मकथात्मक उपन्यास के मुख्य पात्र के स्वभाव की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी का मुख्य पात्र 'आनंदा' है। उसके स्वभाव की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

(i) **पढ़ने की इच्छा**-वह पिछले डेढ़ वर्ष से स्कूल नहीं जा रहा था क्योंकि पिता ने आगे पढ़ाने से मना का दिया था। इसके बावजूद उसके मन में पढ़ने की बहुत इच्छा थी। वह अपने मन की बात माँ से कहता है। तथा इस काम में राव साहब की मदद लेता है।

(ii) **परिश्रमी**- आनंदा बेहद परिश्रमी है। वह सुबह खेत पर जाता, वहाँ से स्कूल तथा लौटकर फिर ढोर चराने जाता है। वह सारा दिन काम करता है।

(iii) **लगनशील**-आनंदा हर कार्य की तन्मयता से करता है। वह छह माह के बाद स्कूल जाता है तथा मेहनत के बल या शीघ्र ही कक्षा के होशियार बच्चों में गिना जाता है। अपनी लगन के कारण ही वह कविता भी लिखने लगता है।

6. 'जूझ' में 'गँवई जीवन के यथार्थ से जूझने का जीवंत चित्रण है।' – इस कथन पर तर्कसम्मत टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी में गाँव के जीवन का यथार्थ वर्णन है। गाँव के बच्चे जीवन में अनेक संघर्ष करते हैं। इस कहानी का पात्र 'आनंदा' भी अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए संघर्ष करता है। उसका पिता खेत के काम को पढ़ाई से ज़्यादा महत्व देता है तथा वह किशोर को स्कूल में पढ़ने नहीं भेजता। आनंदा के मन में पढ़ने की ललक थी। वह पढ़-लिखकर नौकरी पाना चाहता था, परंतु पिता के डर से वह कुछ नहीं कह पाता। वह माँ से अपनी पीड़ा बताता है। माँ उसकी सलाह पर गाँव के जमींदार दत्ता जी राव सरकार से बात करती है। दत्ता जी ने किशोर के पिता को बुलाकर डाँटा तथा बच्चे को पढ़ाने के लिए कहा। पिता ने अनेक कठोर शर्तों के साथ पढ़ाई करने की इजाजत दी। इस तरह किशोर को सुबह से शाम तक स्कूल व खेत में काम करना पड़ा। वह हर कदम पर यथार्थ से जूझता रहा। अंततः उसने सफलता प्राप्त की।

7. 'जूझ' कहानी में आपको किस पात्र ने सबसे अधिक प्रभावित किया और क्यों? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'जूझ' पाठ के आधार पर राव साहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी में मुझे सबसे अधिक दत्ता जी राव देसाई ने प्रभावित किया। उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

(i) **व्यक्तित्व**-राव साहब गाँव के सम्मानित जमींदार हैं। वे उदार, नेकदिल व रोबीले हैं। बच्चों व महिलाओं के साथ सद्व्यवहार करते हैं।

(ii) **समझदार**-राव साहब बेहद समझदार हैं। वे हर बात को ध्यान से सुनते हैं तथा फिर उसका समाधान करते हैं। लेखक व उसकी माँ की समस्या को सुनकर ही वे 'दादा' को बुलाकर उसे बेटे को पढ़ाने की बात समझाते हैं।

(iii) **व्यवहारिक**-राव साहब व्यावहारिक हैं। वे साम-दाम दंड-भेद की नीति जानते हैं। लेखक की पढ़ाई के बारे में योजना के तहत उसके पिता को बुलाकर आम बातें करते हैं। लेखक के बीच में आने पर वे उसकी पढ़ाई के बारे में पूछते हैं। फिर सारी कहानी सुनकर उसके पिता को डाँटते भी हैं तथा समझाते भी हैं। इस तरह वे लेखक की पढ़ाई के लिए उसे तैयार करते हैं।

(iv) **तर्कशील**-राव साहब बेहद तर्कशील हैं। उसके तर्कों के सामने लेखक का पिता निरुत्तर हो जाता है।

8. पाठशाला पहुँचकर लेखक को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा?

उत्तर- राव साहब के दबाव के कारण लेखक को दोबारा पढ़ने की इजाजत मिली। वह स्कूल पहुँचा, परंतु वहाँ उसकी गली के दो लड़कों के अलावा सब अपरिचित थे। लेखक जिन्हें अपने से बुद्धहीन समझता था, अब उन्हीं के साथ बैठने के लिए विवश था। उसके कपड़े भी कक्षा के अनुरूप नहीं थे। उसे अपने अध्यापक का भी नहीं पता था। वह लट्ठे के बने थैले में पुरानी किताबें व

कापियाँ भरकर लाया था। वह बालुगड़ी की लाल माटी के रंग में मटमैला हुई धोती और गमछा पहनकर आया था तथा अकेला था। शरारती लड़के में उसका मज़ाक उड़ाया तथा उसका गमछा छीनकर अपने सिर पर लपेट कर मास्टर की नकल करने लगा। उसने गमछा टेबल पर रख दिया मास्टर ने गमछा देखकर पूछा कि यह किसका है? लेखक ने उसे उठाया। मास्टर ने उसके बारे में पूछताछ की। बीच की छुट्टी में शरारती लड़के ने लेखक की धोती की काछ दो बार निकालने की कोशिश की, परंतु वह दीवार की तरफ पीठ करके छुट्टी होने तक बैठा रहा। घर जाते समय वह सोच रहा था कि लड़के उसकी खिल्ली उड़ाते हैं, धोती खींचते हैं, गमछा खींचते हैं, ऐसे में वह कैसे पढ़ेगा? इससे अच्छा है कि मैं पाठशाला न जाऊँ और खेत में ही काम करता रहूँ। सवेरे उठते ही वह फिर पाठशाला चला गया। धीरे धीरे उसका आत्मविश्वास और सहपाठियों से परिचय बढ़ गया।

9. 'जूझ' के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए क्यों तड़पता था? उसे खेती का काम अच्छा क्यों नहीं लगता था? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर- जूझ के कथानायक का मन पाठशाला जाने के लिए इसलिए तड़पता था क्योंकि उसे शिक्षा से अत्यंत गहरा लगाव था। उसे पता था कि शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है। शिक्षा से ही व्यक्ति अपनी उन्नति के बारे में सोच सकता है तथा वह समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिक्षा व्यक्ति की उन्नति का द्वार खोलती है।

उसे खेती का काम इसलिए अच्छा नहीं लगता था क्योंकि उसे यह विश्वास था कि जन्म भर खेत में काम करते रहने पर भी हाथ कुछ नहीं लगेगा। जो बाबा के समय था, वह दादा के समय नहीं रहा। यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा कारोबार किया जा सकेगा।

10. 'जूझ' कहानी आधुनिक किशोर-किशोरियों को किन जीवन-मूल्यों की प्रेरणा दे सकती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'जूझ' कहानी आज के किशोर-किशोरियों को कई जीवनमूल्यों की प्रेरणा दे सकती हैं। उनमें कुछ निम्नलिखित हैं-

(i) **संघर्षशीलता**-किसी कार्य में सफलता पाने के लिए संघर्षशीलता बहुत आवश्यक है। आज के किशोर-किशोरियाँ शार्टकट रास्ते पर चलकर सफलता चाहते हैं ताकि उन्हें कम से कम परिश्रम और संघर्ष करना पड़े जबकि 'जूझ' कहानी के नायक को जगह-जगह संघर्ष करना पड़ा।

(ii) **दूरदर्शिता**-'जूझ' कहानी का नायक अनंदा दूरदर्शी है। वह अपनी दूरदर्शिता के बल पर अपने पिता को राव साहब के पास भेजने में सफल हो जाता है और अपने पिता के क्रोध से बचते हुए अपनी पढ़ाई के लिए राजी कर लेता है। आधुनिक किशोर-किशोरियों को भी दूरदर्शी बनना चाहिए।

(iii) **परिश्रमशीलता**-आधुनिक किशोर-किशोरियों को अनंदा के समान परिश्रमी बनना चाहिए। अनंदा पढ़ाई के साथ खेल में कठोर परिश्रम करता है और सफलता अर्जित करता है।

(iv) **लगनशीलता**-परिश्रम के अलावा किसी काम में सफलता पाने के लिए लगन होना भी आवश्यक है। अनंदा डेढ़ साल बाद विद्यालय जाता है और अपनी लगन से कक्षा के होशियार बच्चों में गिना जाने लगता है। आधुनिक किशोर-किशोरियों को भी लगनशील बनना चाहिए।

11. 'जूझ' कहानी का नायक किन परिस्थितियों में अपनी पढ़ाई जारी रख पाता है? अगर उसकी जगह आप होते तो उन विषम परिस्थितियों में किस प्रकार पाने सपने को जीवित रख पाते?

उत्तर- 'जूझ' कहानी का नायक अनंदा अर्थात् लेखक की छात्रावस्था में परिस्थितियाँ अत्यंत विपरीत थीं। उसके पिता के लिए खेती ही सब कुछ थी। पढ़ाई-लिखाई के प्रति उसकी सोच अच्छी न थी। वे लेखक से खेती का काम करवाने के अलावा पशु चराने का काम भी करवाना वाहते थे, इसीलिए उन्होंने अनंदा की पढ़ाई छुड़वा दी थी। लेखक उनसे पढ़ाई की बात कहते हुए भी डरता थे। उसे डर था कि वे पढ़ाई का नाम सुनते ही हड्डी-पसली एक कर देंगे। दत्ताराव सरकार के समझाने पर उन्होंने लेखक को स्कूल भेजने की स्वीकृति तो दे दी, पर यह भी प्रतिदिन शाम को खेत पर आने के संबंध में कहा था? "हाँ, यदि नहीं आया किसी दिन तो देख गाँव में जहाँ मिलेगा वहीं कुचलता हूँ कि नहीं, तुझे। तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है, बालिस्टर नहीं होने वाला है तू?" इसके अलावा लेखक का दाखिला पाँचवीं कक्षा में हुआ, जहाँ दो लड़कों को छोड़कर बाकी सारे लड़के नए थे। उनमें शरारती लड़के उसका मजाक उड़ाते थे और उसका गमछा छीनकर अध्यापक की मेज पर रख देते थे। मध्यांतर की छुट्टी में बच्चों ने उसकी धोती खोलकर उसे तंग करने की प्रयास किया, फिर भी लेखक अत्यंत परिश्रम से अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पित रहा। यदि लेखक की जगह मैं होता तो इन परेशानियों और विपरीत परिस्थितियों के बीच भी लेखक की तरह हार न मानता और अपनी पढ़ाई के प्रति कठिन मेहनत करते हुए अपने सपनों को जीवित रखने की हरसंभव प्रयास करता और सफलता प्राप्त करना।

<u>III. मूल्यपरक प्रश्न</u>

निम्नलिखित गदयांशों को पढ़कर पूछे गए मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) पाठशाला जाने के लिए मन तड़पता था। लेकिन दादा के सामने खड़े होकर यह कहने की हिम्मत नहीं होती कि, "मैं पढ़ने जाऊँगा।" डर लगता था कि हड्डी-पसली एक कर देगा। इसलिए मैं इस ताक में रहता कि कोई दादा को समझा दे। मुझे इसका विश्वास था कि जन्म-भर खेत में काम करते रहने पर भी हाथ कुछ नहीं लगेगा। जो बाबा के समय था, वह दादा के समय नहीं रहा। यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। पढ़ जाऊँगा तो नौकरी लग जाएगी, चार पैसे हाथ में रहेंगे, विठोबा आण्णा की तरह कुछ धंधा कारोबार किया जा सकेगा।' अंदर-ही-अंदर इस विचार के विचार चलते रहते।

प्रश्न- (i) पढ़ाई के प्रति दादा की सोच और व्यवहार को आप कितना उचित मानते हैं? उनके इस व्यवहार से बच्चे में मूल्यों का कितना विकास हो सकेगा?

(ii) जो बाबा के समय था, वह दादा के समय नहीं रहा। - इसके आलोक में बताइए कि इस परिवर्तन से हमारे मूल्य कितने प्रभावित हुए हैं ?

(iii) आप लेखक की जगह होते तो क्या करते? क्या आप भी अपनी पढ़ाई पर ऐसा ही जोर देते?

उत्तर- (i) पढ़ाई के प्रति दादा की सोच और व्यवहार को मैं एकदम अनुचित मानता हूँ। पढ़ाई की बात करते ही वे बच्चे की बुरी तरह पिटाई कर दिया करते थे। इस प्रकार के व्यवहार से बच्चों में भय, कुंठा, चिड़चिड़ापन आदि बढ़ेगा जिससे मूल्यों का विकास नहीं ह्रास होगा।

(ii) परिवर्तन का प्रभाव हमारे आसपास की प्रत्येक वस्तु पर पड़ा है, फिर मानवीय मूल्य ही इससे अछूते कैसे रहते। इसका प्रभाव यह है कि हमारे मूल्यों में गिरावट आई है।

(iii) मैं लेखक की जगह होता तो अपने पिता से विनम्रतापूर्वक पढ़ाई करने की अनुमति माँगता। उन्हें अच्छा व प्रसन्न देखकर पढ़ाई के लाभ बताता और पाठशाला जाने का हर संभव प्रयास करता। मैं ऐसा इसलिए करता क्योंकि शिक्षा से मानवीय मूल्योः जैसे- सच्चाई, साहस, सत्यवादिता, दृढ़ता आदि का उदय एवं विकास होता है।

(ख) उठते-उठते मैंने भी दत्ता जी राव से कहा जनवरी का महीना है। अब परीक्षा नजदीक आ गई है। मैं यदि अभी भी कक्षा में जाकर बैठ गया और पढ़ाई की दुहराई कर ली तो दो महीने में पाँचवीं की सारी तैयारी हो जाएगी और मैं परीक्षा में पास हो जाऊँगा। इस तरह मेरा साल बच जाएगा। अब खेती में ऐसा कुछ काम नहीं है। मेरा पहले ही एक वर्ष बेकार में चला गया है।

"ठीक है, ठीक है। अब तुम दोनों अपने घर जाओ-जब वह आ जाए तो मेरे पास भेज देना और उसके पीछे से घड़ी भर बाद में तू भी आ जाना रे छोरा।"

"जी!" कहकर हम खड़े हो गए। उठत-उठते हमने यह भी कहा कि "हमने यहाँ आकर ये सभी बातें कही हैं, यह मत बता देना, नहीं तो हम दोनों की खैर नहीं है। माँ अकेली साग-भाजी देने आई थी। यह बता देंगे तो अच्छा होगा।"

प्रश्न- (i) लेखक और उसकी माँ का दत्ता जी के पास जाने को आप कितना उचित मानते हैं? इस्सी लेखक के किन-किन मूल्य के बारे में पता चलता है ?

(ii) एक और पति से चोरी और दूसरी ओर बच्चे की शिक्षा। ऐसे में माँ द्वारा बच्चे की शिक्षा चुनने को आप कितना उचित मानते हैं? और क्यों?

(iii) पिता की पिटाई से बचने के लिए बच्चे ने झूठ का सहारा लिया। उसकी जगह आप होते तो कैसे बचते? ऐसा करने के लिए आप किन-किन मूल्यों का सहारा लेते?

उत्तर- (i) लेखक और उसकी माँ का दत्ता जी के पास जाने को मैं पूरी तरह से उचित मानता हूँ, क्योंकि उनके इसी कदम पर बच्चे का भविष्य निर्भर था। उनके लिए गए इस निर्णय से लगन, दृढ़निश्चय, साहस, स्पष्टवादिता जैसे मूल्यों का पता चलता है।

(ii) लेखक की माँ का लेखक के साथ दत्ता राव के पास अपने पति को बिना बताए जाने को मैं एकदम सही मानता हूँ क्योंकि शिक्षा से बच्चे का भविष्य उज्ज्वल बनता तथा उसमें अनेक मूल्यों का विकास होता।

(iii) पिता की पिटाई से बचने के लिए बच्चे ने जो झूठ का सहारा लिया था, मैं वैसा न करता। मैं दत्ता राव की सहायता से पिता जी को यह समझाने का प्रयास करता कि पढ़ाई के द्वारा ही हमारा और आपका भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। इसके लिए मैं साहस, ईमानदारी, सच्चाई जैसे मूल्यों का सहारा लेते हुए दत्ता राव से सच-सच बताने को कहता।

(ग) "हाँ, यदि नहीं आया किसी दिन तो देख गाँव में जहाँ मिलेगा वहीं कुचलता हूँ कि नहीं-तुझे। तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है, बालिस्टर नहीं होनेवाला है तू?" दादा बार-बार कुर-कुर कर रहा था-मैं चुपचाप गरदन नीची करके खाने लगा था।

रोते-धोते पाठशाला फिर से शुरू हो गई। गरमी-सरदी, हवा-पानी, वर्षा, भूख-प्यास आदि का कुछ भी खयाल न करते हुए खेती के काम की चक्की में, ग्यारह से पाँच बजे तक पिसते रहने से छुटकारा मिल गया। उस चक्की की अपेक्षा मास्टर की छड़ी की मार अच्छी लगती थी। उसे मैं मजे से सहन कर लेता था। दोपहरी-भर की कड़क धूप का समय पाठशाला की छाया में व्यतीत हो रहा था-गरमी के दो महीने आनंद में बीत गए।

प्रश्न- (i) 'बालिस्टर होने वाला नहीं है तू-आपके विचार से दादा ने ऐसा क्यों कहा होगा? आप उनके कथन से कितना सहमत हैं?

(ii) लेखक की जगह आप होते तो पढ़ाई के प्रति आपका क्या दृष्टिकोण होता और क्यों?

(iii) लेखक के विचार आज के संदर्भ में कितने प्रासंगिक हैं, बताइए। इनकी पुष्टि में किसका योगदान था?

उत्तर- (i) 'बालिस्टर होने वाला नहीं है तू' -ऐसा लेखक के दादा ने इसलिए कहा होगा, ताकि लेखक अपने मन से पढ़ाई का विचार बिल्कुल निकाल दे। उनके इस विचार से मैं बिल्कुल सहमत नहीं हूँ क्योंकि इससे बच्चों के मानवीय मूल्यों में प्रगाढ़ता नहीं आती बल्कि उनका विकास बाधित होता।

(ii) यदि मैं लेखक की जगह होता तो मैं भी दृढ़ इच्छाशक्ति, लगन और विश्वास के साथ पढ़ाई के बारे में सोचता और पढ़ाई आगे बढ़ाता। क्योंकि शिक्षा से मनुष्य योग्य एवं समाजोपयोगी बनता है।

(iii) शिक्षा के बारे में लेखक के जो विचार है वह आज के समय में और भी प्रासंगिक है। आज बच्चे शिक्षा से मुँह मोड़ रहे हैं। यह मूल्यों के विकास की दृष्टि से अच्छा नहीं है। लेखक में ऐसे विचार पुष्ट करने में दत्ता जी का योगदान था।

(घ) लेखक के दादा का पढ़ाई के प्रति जो दृष्टिकोण था उसे आप कितनी उपयुक्त पाते हैं ? ऐसे लोगों के दृष्टिकोण में बदलाव लाने के लिए आप क्या प्रयास कर सकते हैं?

उत्तर- लेखक चाहता था कि वह भी अन्य बच्चों के साथ स्कूल जाए. पढ़ाई करे और अच्छा आदमी बने। पाठशाला जाने के लिए उसका मन तड़पता था, पर उसके दादा का पढ़ाई के प्रति दृष्टिकोण स्वस्थ न थे। वे चाहते थे कि लेखक पढ़ाई करने के बजाय खेती में काम करे और जानवरों को चराए। किसी दिन खेत में काम करने के लिए न जाने पर वें लेखक को बुरी तरह डाँटते। एक बार वे लेखक से कह रहे थे, "हाँ, यदि नहीं आया किसी दिन तो देख गाँव में जहाँ मिलेगा, वही कुचलता हूँ कि नहीं तुझे। तेरे ऊपर पढ़ने का भूत सवार हुआ है। मुझे मालूम है, बालिस्टर नहीं होने वाला है तू?" बच्चे को पढ़ाई से विमुख करने वाला, बच्चों की शिक्षा में बाधक बनने वाला ऐसा दृष्टिकोण किसी भी कोण से उपयुक्त नहीं है।

ऐसे लोगों का दृष्टिकोण बदलने के लिए मैं निम्नलिखित प्रयास करूँगा-

(i) लेखक के दादा जैसे लोगों को शिक्षा का महत्व बताऊँगा।

(ii) शिक्षा से वंचित बच्चे मज़दूर बनकर रह जाते हैं। यह बात उन्हें समझाऊँगा।

(iii) शिक्षा व्यक्ति के जीविकोपार्जन में साधन का कार्य करती है। इस तथ्य से उन्हें अवगत कराऊँगा।

(iv) पढ़े-लिखे सभ्य लोगों के उन्नत जीवन का उदाहरण ऐसे लोगों के सामने प्रस्तुत करूँगा।

(ङ) आज भी समाज को दत्ता जी राव जैसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है। इससे आप कितना सहमत हैं और क्यों ? यदि आप दत्ता जी राव की तरह होते तो क्या करते?

उत्तर- दत्ता जी राव नेक दिल, उदार एवं गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। वे बच्चों एवं महिलाओं से विशेष स्नेह करते थे। वे हरेक व्यक्ति की सहायता करते थे। लेखक और उसकी माँ ने जब उनको अपनी पीड़ा बताई तो शिक्षा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखने वाले दत्ता राव जी ने उन्हें मदद का आश्वासन दिया और लेखक के दादा को बुलवाया। जब वे राव जी के पास गए तो उन्होंने बच्चे को स्कूल न भेजने के लिए दादा जी को खूब डाँटा-फटकारा। उन्होंने बच्चे का भविष्य खराब करने की बात कहकर बच्चे को स्कूल भेजने का वायदा ले लिया और स्कूल, न भेजने पर लेखक को पढ़ाने का जिम्मा स्वयं लेने की बात कही। राव जी की डाँट से लेखक के दादा कुछ न कह सके और पढ़ाई के लिए स्वीकृति दे दी। इसके बाद लेखक स्कूल जाने लगा। आज भी बहुत-से बच्चे विभिन्न कारणों से स्कूल का मुँह देखने से वंचित हो जाते हैं या पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं।

ऐसे बच्चों को पढ़ाई से जोड़ने के लिए राव जी जैसे व्यक्तित्व की आज भी आवश्यकता है। इससे मैं पूर्णतया सहमत हूँ। इसका कारण यह है कि इससे बच्चे पढ़-लिखकर योग्य और समाजोपयोगी नागरिक बन सकेंगे। वे पढ़-लिखकर देश की उन्नति में अपना योगदान दे सकेंगे।

यदि मैं दत्ता जी राव की जगह होता तो लेखक को स्कूल भेजने के लिए हर संभव प्रयास करता और फिर भी उसके दादा उसे स्कूल भेजने के लिए न तैयार होते तो मैं लेखक को अपने पास रखकर पढ़ाता और उसकी हर संभव मदद करता।

(च) सौंदलगेकर के व्यक्तित्व ने लेखक को किस प्रकार प्रभावित किया ? आप उनके व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताएँ अपनाना चाहेंगे ?

उत्तर- सौंदलगेकर एक अध्यापक थे जो लेखक के गाँव में मराठी पढ़ाया करते थे। वे कविताओं को बहुत अच्छी तरह से पढ़ाते थे और कथ्य में खो जाते थे। उनके सुरीले कंठ से निकली कविता और भी सुरीली हो जाती थी। उन्हें मराठी के अलावा अंग्रेजी कविताएँ भी जबानी याद थीं? वे स्वयं कविता की रचना करते थे और छात्रों को सुनाया करते थे। लेखक उनकी इस कला और कविता सुनाने की शैली से बहुत प्रभावित हुआ। इससे पहले लेखक कवियों को किसी दूसरी दुनिया का जीव मानता था पर सौंदलगेकर से मिलने के बाद जाना कि इतनी अच्छी कविता लिखने वाले भी हमारे-उसके जैसे मनुष्य होते हैं। अब लेखक को लगा कि वह भी उनकी जैसी कविता गाँव, खेत आदि से जुड़े दृश्यों पर बना सकता है। वह भैंस चराते-चरातें फसलों और जानवरों पर तुकबंदी करने लगा। वह राह चलते तुकबंदी करता और उसे लिखकर मास्टर को दिखाता। बाद में निरंतर अभ्यास से वह कविता लिखना सीख गया। इस प्रकार लेखक को सौंदलगेकर के व्यक्तित्व ने बहुत प्रभावित किया और उसमें कविता लेखन की रुचि उत्पन्न कर दी।

मैं सौंदलगेकर के व्यक्तित्व की अपने कार्य के प्रति समर्पित रहने, दूसरों को प्रोत्साहित करने, यथासंभव दूसरों की मदद करने जैसी विशेषताएँ अपनाना चाहूँगा।

<u>पाठ आधारित अन्य प्रश्नोत्तर</u>

1. जूझ कहानी के आधार पर दत्ता जी राव देसाई का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर- 1. **समझदार व्यक्ति-** दत्ता जी राव ने छोटे से बालक आनंद की बातों को सुना। फिर आनंद के दादा को बुलाया और आनंद को विद्यालय भेजने पर जोर दिया। उन्होंने दादा से इस प्रकार बातें की कि उन्हें शक ही नहीं हुआ कि ये सब उन्हें आनंद ने बताया है।

2. **ग्रामीणों के मददगार-** दत्ता जी गाँव के प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे किंतु उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का दुरुपयोग नहीं किया ग्रामीण उनके पास अपनी समस्याएँ लेकर आते थे। दत्ता जी उनकी समस्याओं को हल करने का प्रयास करते थे।

3. **प्रभावशाली व्यक्तित्व-** दत्ता जी गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। सभी उन्हें बहुत मान देते थे। उनका व्यक्तिव रोबीला था और ग्रामीण उनकी बात मान जाते थे।

2. जूझ कहानी का उद्देश्य क्या है ?

अथवा

'विषम परिस्थितियों में भी विकास संभव हैं।' जूझ ' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है कि मनुष्य को संघर्ष करते रहना चाहिए कहानी में लेखक के जीवन के संघर्ष को, उसके परिवेश के साथ दिखलाया गया है। लेखक का शिक्षा-प्राप्ति हेतु पिता से संघर्ष, कक्षा में संघर्ष, खेती में संघर्ष और अंत में उसकी सफलता कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं। अतः समस्याओं से भागना नहीं चाहिए। पूरे आत्मविश्वास से उनका मुकाबला करना चाहिए। संघर्ष करने वाले को सफलता अवश्य मिलती है।

3. 'जूझ' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- जूझ का अर्थ है -संघर्ष। यह कथा कथानायक के जीवन भर के संघर्ष को दर्शाती है। बचपन से अभावों में पला बालक, विपरीत परिस्थितियों पर विजय हासिल कर सका। अतः यदि मन में लगन हो, भरपूर आत्मविश्वास हो तो सफलता कदम चूमती है।

4. 'जूझ' कहानी के आधार पर आंनदा के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

'जूझ' शीर्षक के औचित्य पर विचार करते हुए यह स्पष्ट करें कि क्या यह शीर्षक कथानायक की किसी केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है ?

उत्तर- 1. **पढ़ने की लालसा-** आनंदा पिता के साथ खेती का काम सँभालता था। लेकिन पढ़ने की तीव्र इच्छा ने उसे जीवन का एक उद्देश्य दे दिया और वह अपने भविष्य को एक सही दिशा देने में सफल होता है।

2. **वचनबद्धता-** आनंदा ने विद्यालय जाने के लिए पिता की जो शर्त मानी थी उनका पालन हमेशा किया। वह विद्यालय जाने से पहले

बस्ता लेकर खेतों में पानी देता। वह ढोर चराने भी जाता पिता की बातों का अनुपालन करता।

3. **आत्मविधासी एवं कर्मठ बालक-** आनंदा के जीवन में अभाव ही थे। उसके पिता ने ही उसका पाठशाला जाना बंद करवा दिया था। किंतु उसने हिम्मत नहीं हारी, पूरे आत्मविश्वास के साथ योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ा और सफल हुआ।

4. **कविता के प्रति झुकाव-** आनंदा ने मास्टर सौंदलगेकर से प्रभावित होकर काव्य में रुचि लेनी प्रारम्भ की। वह खेतों में पानी देता, भैंस चराने समय भी कविताओं में खोया रहता था। धीरे-धीरे वह स्वयं तुकबंदी करने लगा। कविताएँ लिखने से उसमें आत्मविश्वास बढ़ा।

5. आनन्दा के पिता की भाँति आज भी अनेक गरीब व कामगार पिता अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते थे , क्यों ? आपकी दृष्टि मैं उन्हें किस प्रकार प्रेरित किया जा सकता है ?

उत्तर- अधिकतर लोग अशिक्षित होने के कारण शिक्षा के महत्व को नहीं समझते। अधिक बच्चे, कम आमदनी, दो अतिरिक्त हाथों से कमाई की लालसा आदि इसके प्रमुख कारण हैं। उन्हें प्रेरित करने हेतु उन्हें जागरूक करना, शिक्षा का महत्व बताना, शिक्षित होकर जीवन स्तर में सुधार के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

6. सकारात्मक सृजनात्मकता से आत्मविश्वास को दृढ़ता मिलती है। जूझ कहानी के आधार पर समझाइए।

उत्तर- लेखक ने पढ़ाई में स्वयं को पिछड़ता हुआ पाया। किंतु शिक्षक सौदंलगेकर से प्रेरित होकर लेखक कुछ तुकबंदी करने लगा। धीरे-धीरे उसमें आत्मविश्वास बढ़ने लगा सृजनात्मकता ने उसके जीवन को नया मोड़ दिया। अतः लेखक के द्वारा कविता रच लेने से उसमें आत्मविश्वास का सृजन हुआ।

7. 'जूझ' कहानी के आधार पर बताइए कि एक प्रभावशाली शिक्षक किस तरह अपने विद्यार्थी का भविष्य संवार सकता है ?

अथवा

आनन्दा से कवि डॉ. आनन्द यादव बनने की यात्रा में मास्टर सौंन्दलगेकर की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- मास्टर सौंदलगेकर कुशल अध्यापक, मराठी के ज्ञाता व कवि, सुरीले ढंग से स्वयं की व दूसरों की कविताएँ गाते थे। आनन्दा को कविता या तुकबन्दी लिखने के प्रारम्भिक काल में उन्होंने उसका मार्गदर्शन व सुधार किया, उसका आत्मविश्वास बढ़ाया जिससे वह धीरे-धीरे कविताएँ लिखने में कुशल हो कर प्रतिष्ठित कवि बन गया।

8. आनन्दा को पुनः स्कूल जाने पर क्या-क्या झेलना पड़ा ?

उत्तर- स्वयं से कम आयु के छात्रों के साथ बैठना पड़ा, वह अन्य छात्रों की हँसी का पात्र बना तथा उसे पिता की इच्छा के कारण घर व स्कूल दोनों में निरंतर काम करना पड़ा।

9. स्कूल में मानीटर ने आनंदा को सर्वाधिक प्रभावित किया और कैसे ?

उत्तर- मानीटर बसंत पाटिल ने उसे सर्वाधिक प्रभावित किया। वह शांत व अध्ययनशील छात्र था। आनंदा उसकी नकल कर हर काम करने लगा, धीरे-धोरे एकाग्रचित व अध्ययनशील बनकर आनन्दा भी कक्षा में सम्मान का पात्र बन गया।

10. आपके दृष्टि से पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- लेखक का मत है कि जीवन भर खेतों में काम करके कुछ भी हाथ आने वाला नहीं है। पीढ़ी दर पीढ़ी खेतों में काम करके कुछ प्राप्त नहीं हो सका। वे मानते हैं कि यह खेती हमें गड्ढे में धकेल रही है। अगर मैं पढ़-लिख गया तो कहीं मेरी नौकरी लग जाएगी या कोई व्यापार करके अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है। माँ-बेटा जब दत्ता जी राव के घर जाकर पूरी बात बताते हैं तो दत्ता जी राव पिता जी को बुलाकर खूब डाँटते हैं और कहते हैं कि तू सारा दिन क्या करता है। बेटे और पत्नी को खेतों में जोत कर तू सारा दिन साँड की तरह घूमता रहता है। कल से बेटे को स्कूल भेज, अगर पैसे नहीं हैं तो फीस में दूँगा। परन्तु पिता जी को यह सब कुछ बुरा लगा। दत्ता जी राव के सामने 'हाँ करने के बावजूद भी वे आनन्द को स्कूल भेजने के पक्ष में नहीं थे। इस प्रकार लेखक और उनके पिताजी की सोच में एक बड़ा अन्तर है। हमारे खयाल से पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया लेखक के पिता की सोच से ज्यादा ठीक है क्योंकि पढ़ने-लिखने से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है।